॥ संस्कृतं संस्कृतेर्मूलं ज्ञानविज्ञानवारिधिः ॥

विद्वत्सपर्या

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृत सप्ताह (16/08/24 से 22/08/24) का शुभारंभ आज सारस्वत सभागार में 'विद्वत्सपर्या' नामक विशिष्ट कार्यक्रम के साथ हुआ। इस अवसर पर काशी के प्रतिष्ठित शास्त्र पण्डित और संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध प्रचारक, आचार्य कृष्णकान्त शर्मा जी विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्कृत दिवस को हमें संकल्प दिवस के रूप में मनाना चाहिए और मैं इस संस्कृत सप्ताह को संकल्प सप्ताह के रूप में देखता हूँ।

उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा भारतीय ज्ञान परम्परा की संवाहिका है। संस्कृत भाषा के संरक्षण के माध्यम से हम शास्त्रों का संरक्षण करेंगे, शास्त्रों के संरक्षण से हमारी निर्मल संस्कृति का संरक्षण होगा, और इसके माध्यम से हम समग्र भारतीय ज्ञान परम्परा के परिरक्षण में सक्षम हो सकेंगे। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः' इस मंत्र को स्मरण करते हुए संकल्प लेना होगा। इस दृष्टि से संस्कृत सप्ताह का यह आयोजन अत्यंत सार्थक है।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति आचार्य श्रीनिवास वरखेडी जी ने संस्कृत के संरक्षण के लिए संकल्प लिया है और उन्होंने कहा कि संस्कृत के सर्वतोमुखी विकास के लिए हम सब कटिबद्ध हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग आदि शास्त्रों के संरक्षण का संकल्प पहले ही लिया जा चुका है, और आचार्य कृष्णकान्त शर्मा जी के आगमन से हमारा संकल्प और भी सुदृढ़ हो गया है। विद्वत्सपर्या में आचार्य शर्मा जी की उपस्थिति से हम सब अत्यंत सुखद अनुभव कर रहे हैं।

आचार्य जी की विद्वत्ता को देखते हुए कुलपति जी ने एक नीति श्लोक उद्धृत किया:

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्वलाः
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

कुलपति जी ने कहा कि संस्कृत वाणी की उपासना में आचार्य शर्मा जी हम सबके लिए आदर्श हैं और आगे भी उनका मार्गदर्शन लिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, कुलपति जी ने यह भी घोषणा की कि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के दक्षिण के शृङ्गेरी परिसर और उत्तर के देवप्रयाग परिसर दोनों ही दुर्लभ शास्त्र अध्ययन के लिए पूरक हैं। आने वाले दिनों में इन परिसरों में शास्त्रों के संरक्षण के लिए विशेष कार्य किया जाएगा।

इस कार्यक्रम का स्वागत शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. मदन मोहन झा जी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. नारायण सिंह जी ने दिया और कार्यक्रम का संचालन आचार्य पवन व्यास जी ने सुचारु रूप से किया। संस्कृत सप्ताह के संयोजक डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी जी ने योजना के तहत आयोजन किया। डॉ. देवानन्द शुक्ल जी और अन्य अधिकारियों ने इस कार्य में सहयोग प्रदान किया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. रा.गा. मुरली कृष्ण जी ने अपेक्षित व्यवस्थाओं हेतु सहर्ष सहयोग प्रदान किया। समग्र विश्वविद्यालय के सभी गुरु-शिष्य इस सप्ताह के शुभारंभ को ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से देखने में सक्षम रहे।

- **डॉ. गणेश ति. पण्डित**
- **डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी**

सहयोग
श्री विनय कुमार शुक्ल
श्री श्रीश समीर के एस्